करवा चौथ के व्रत का आध्यात्मिक रहस्य

ब्रह्माकुमार राज, सिडनी (आस्ट्रेलिया)

सृष्टि-चक्र के अनेक गुह्य राज़ों का परमपिता परमात्मा शिव ने हमारे सामने अनावरण किया है। परमात्मा शिव ने बताया है कि सृष्टि के प्रथम आधे भाग में अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग में सभी आत्माएँ शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक रूप से स्वस्थ होती हैं लेकिन जब द्वापर युग आता है तो माया अर्थात् पाँच विकारों की बीमारी लगती है और आत्मा सभी प्रकार से अस्वस्थ होने लगती है। जिस प्रकार अस्वस्थ व्यक्ति को राय-सलाह देने वाले हज़ारों डॉक्टर प्रकट हो जाते हैं, उसी प्रकार बीमार आत्मा को तन-मन के स्वास्थ्य, घर में शांति-समृद्धि आदि की प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार की सलाहें, नियम, व्रत आदि मिलने लगते हैं, फिर चाहे ये सलाहें पंडित, महात्मा, पुजारी, संत, गुरु, गोसाई आदि किसी से भी मिलें। यह तो हम सभी जानते हैं कि एक पौधे के निर्माण का मूल आधार उसका बीज होता है। पौधे की नस्ल को सुधारने के लिए बीज को सुधारना होता है। इस बात की जानकारी के अभाव में यदि कोई पेड़ के तने को धागा बाँध दे, पत्तों पर छींटे मार दे, शाखाओं पर हल्दी-रोली-तिलक आदि लगा दे तो क्या पौधे का सुधार हो जायेगा, नहीं ना! द्वापर युग के बाद आत्मा की पहचान खो जाने के कारण हमने शरीर से संबंधित अनेक प्रकार के कर्म-कांड करने शुरू किए। शरीरों को सजाया, कहीं धागे और कंगन पहने और अन्य भी अनेक प्रकार के खान-पान से संबंधित नियम बनाए लेकिन दर्द बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। द्वापर युग के बाद प्रारंभ होने वाले अनेक प्रकार के व्रतों में से एक मुख्य व्रत है करवा चौथ का व्रत। संसार में जहाँ-जहाँ भी भारतीय लोग हैं वहाँ यह व्रत पूरे हर्षोल्लास, श्रद्धा और भावना से मनाया जाता है।

व्रत का उद्देश्य

शादीशुदा महिलाएँ पति की लंबी आयु तथा उसके जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति के लक्ष्य से यह व्रत रखती हैं। कहीं-कहीं कुंवारी लड़कियाँ भी इस व्रत का पालन करती हैं। उनके मन में भी होने वाले पति के लिए शुभकामनाएँ होती हैं।

व्रत के फल से संबंधित कुछ विचारणीय तथ्य

व्रत का जो उद्देश्य, ऊपर बताया गया है, आज के युग में हम देखते हैं कि वह पूर्ण नहीं हो पा रहा है। व्रत का फल दिनों-दिन असत्य साबित होता जा रहा है। इसे देख मन में कई तरह के प्रश्न उत्पन्न होते हैं जैसे कि

1. व्रत रखने वाली कई महिलाओं का सुहाग उजड़ जाता है तो प्रश्न उठता है कि क्या उनके व्रत में श्रद्धा-भावना की कमी थी लेकिन ऐसा तो हम नहीं कह सकते कि किसी नारी में श्रद्धा-भावना ना हो।

2. मान्यता है कि पति की लंबी आयु हो तो नारी सुखी रहेगी परंतु आजकल मायने बदल रहे हैं, पत्नी के व्रत, पत्नी को महंगे पड़ते नज़र आते हैं क्योंकि यदि पति शराबी, क्रोधी, दुराचारी हो और उसकी आयु भी लंबी हो तो पत्नी के कारागार के दिन भी उतने ही लंबे हो जाते हैं।

3. पत्नी यदि सुहागिन ही चली जाए तो पति दूसरी शादी कर लेता है ऐसे में उसकी लंबी आयु की कामना का पत्नी को क्या फल मिल पाया? आजकल तो पति चला जाए तो पत्नियाँ भी दूसरी शादी कर लेती हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि पत्नी के व्रतों से, प्रथम पति की आयु तो लंबी हुई नहीं अब उसे दूसरे पति के लिए भी व्रत करने पड़ेंगे।

4. इस व्रत में पत्नी पति के लिए पानी तक नहीं पीती है लेकिन पति महोदय

तो शराब की पूरी बोतल ही पी जाते हैं। पत्नी कुछ भी खाती नहीं लेकिन पति महोदय सारे दिन चरते रहते हैं तो क्या पतियों के लिए कोई नियम नहीं है।

5. जब इस व्रत का प्रारंभ हुआ तो पति-पत्नी के संबंध फिर भी अच्छे थे लेकिन इसको करते-करते गृहस्थ जीवन का उत्थान के बजाय पतन ही होता नज़र आ रहा है क्योंकि कहीं तलाक हो जाता है, लड़ाई-झगड़े तो चलते ही रहते हैं, कई बिना तलाक के भी अलग रहना शुरू कर देते हैं।

6. जब कोई किसी के लिए त्याग करता है तो त्याग करने वाला स्वत: ही दिल पर चढ़ जाता है। परंतु प्रश्न यह भी है कि व्रत के कारण भूख-प्यास सब कुछ सहन करने वाली नारी फिर भी कई बार पति की नज़रों में सम्मानित स्थान क्यों नहीं प्राप्त कर पाती? व्रत करने के बावजूद उसके अत्याचारों का शिकार बनी रहती है।

कलाएँ क्यों उतरी?

ऊपर वर्णित सभी विचारणीय तथ्यों का सही-सही समाधान परमपिता परमात्मा शिव ही प्रदान करते हैं क्योंकि वे ही त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ हैं। भगवान कहते हैं कि बच्चे, संसार की सभी आत्माएँ मेरी सजनियाँ हैं और मैं एक ही सबका प्रिय साजन हूँ। सभी आत्माएँ आशिक हैं और मैं एक ही सबका प्यारा माशूक हूँ। परमपिता परमात्मा शिव का कलियुग के अंत में संगमयुग पर जब अवतरण होता है तो सभी आत्मा रूपी सजनियाँ पतित बन चुकी होती हैं। उनका परमपवित्र परमात्मा से मेल तभी हो सकता है जब वे पाँच विकारों के त्याग का व्रत धारण करें। इसलिए संगमयुग में परमात्मा को पति मानकर आत्माओं ने विकारों का, अशुद्ध खान-पान का और अन्य गंदी, गलत प्रवृत्तियों का जो व्रत किया था, उसी की याद में भक्ति-मार्ग में पत्नियाँ पतियों के लिए यह व्रत करने लगीं। सर्वसमर्थ परमात्मा ने तो इस व्रत के फलस्वरूप आत्माओं को सोलह कला संपूर्ण बनाकर सतयुग के महाराजा और महारानी बना दिया। उपरोक्त सत्यता को जाने बिना, इस व्रत को करते हुए भी हमारी कलाएँ नीचे ही उतरती आ रही हैं।

सोलह शृंगार का अर्थ

इस व्रत के दिन पत्नी सोलह शृंगार करती है, पतियों के सोलह शृंगार का गायन नहीं है क्योंकि वास्तविक पति तो परमात्मा शिव है जो सदा सजा-सजाया है, गुणों से भरपूर है, शक्तियों का सागर है। वह किसी के द्वारा सजाये जाने का मोहताज नहीं है परंतु चूंकि परमात्मा आत्माओं का गुणों से शृंगार करता है, सोलह कला संपूर्ण बनाता है तो उसकी याद में सजनियाँ सोलह शृंगार करती हैं।

मरजीवा जन्म

व्रत से संबंधित जो कहानी है, उसमें दिखाते हैं कि सात भाइयों की प्रिय बहन ने धोखे में आकर दिन के उजाले में ही व्रत को तोड़ दिया। प्रश्न उठता है कि क्या कोई नारी इतनी विचारहीन हो सकती है कि उसे दिन के उजाले में चंद्रमा के उग आने का भ्रम हो जाये? वास्तव में इसका भावार्थ यही है कि सतयुग-त्रेतायुग में हम आत्माओं ने पवित्रता का व्रत निभाया परंतु द्वापर युग शुरू होते ही उस व्रत को तोड़ दिया। व्रत टूटने से आत्मा ईश्वर साजन द्वारा दिए गए अलौकिक वर्से से वंचित हो गई जिसे कहानी में पति के साथ से वंचित होना दिखाया गया है। कहानी में आगे आता है कि बारह अलग-अलग भारतीय देशी महीनों की बारह चौथ, देवियों का रूप धारण करके उसके सामने आईं और कोई भी उसे सुहाग का वरदान नहीं दे सकी लेकिन जब बारह महीने पूरे होने पर वही कार्तिक की चौथ आई तो उसे सुहाग का वरदान मिल गया। इसका अर्थ भी यही है कि द्वापर युग के बाद हमने अनेक देवी-देवताओं से सुख, शांति, पवित्रता, ज्ञान, गुण, शक्तियों, लंबी आयु, निरोगी काया

का वरदान मांगा लेकिन कोई भी हमें अकाल मृत्यु, रोग, शोक से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सका। सृष्टि-चक्र घूमते-घूमते कलियुग के अंत में जब पुन: पुरुषोत्तम संगमयुग आता है, परमात्मा अवतरित होते हैं तब वे ही हमारे खोये हुए राजभाग को, अविनाशी सुखों को, कंचन काया के वरदानों को वापस लौटा सकते हैं। कहानी के अंत में आता है कि करवा चौथ का वरदान पाकर बारह महीने से मृत पड़ा व्यक्ति जीवित हो गया और फिर दोनों हँसी-खुशी में आ गए। क्या किसी व्यक्ति का मृत शरीर बारह महीने तक वैसा का वैसा, बिना किसी केमिकल के, रह सकता है? क्या कोई नारी बारह महीने लगातार मृत शरीर के पास बैठ सकती है? शब्दार्थ में तो यह सब अविश्वसनीय प्रतीत होता है परंतु इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि आधाकल्प से आत्म-बल विहीन मृतप्राय आत्मा संगमयुग में परमपिता परमात्मा के ज्ञान द्वारा मरजीवा जन्म प्राप्त करके सच्चे दैवी पारिवारिक स्नेह में हँसी-खुशी और मौज का अनुभव करती है और आगे के 21 जन्मों के लिए भी निर्विकारी, पवित्र और खुशहाल दैवी गृहस्थ जीवन का वरदान प्राप्त कर लेती है।

व्रत के संबंध में और भी बहुत सारी छोटी-मोटी रस्में हैं, उनके विस्तार में हम नहीं जाते लेकिन सार रूप में हम यह कह सकते हैं कि यह व्रत केवल पत्नियों के लिए नहीं बल्कि सर्व आत्माओं के लिए है क्योंकि परमात्मा ही सर्व का कल्याण करने वाला प्यारा साजन है। संगमयुग पर नर और नारी दोनों ही ज्ञान कलश धारण कर, पवित्रता का व्रत पालन करें, यही इस व्रत का सच्चा आध्यात्मिक रहस्य है। 'करवा' वास्तव में ज्ञान-कलश का प्रतीक है और 'चौथ' शब्द चारों युगों की याद दिलाता है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग इन चारों युगों के पूरा हो जाने पर संगमयुग में परमपिता परमात्मा शिव हम आत्माओं को करवा अर्थात् ज्ञान-कलश प्रदान करते हैं जिससे 21 जन्मों के लिए हमारी गति-सद्गति हो जाती है। अत: बेहद की भावना से हमें इस व्रत की पालना करनी है और बेहद की प्राप्ति भी करनी है। ❖

रावण कौन?

एच. आर. सगर, मथुरा

पुतला रावण का बना, जला रहे हर साल
फिर भी वह मरता नहीं, होता जाये विशाल
होता जाये विशाल, नहीं रावण पहचानें
काम, क्रोध, देहभान आदि को रावण जानें
शिवबाबा आ संगमयुगे देता यह पहचान
मारें यह रावण तभी भारत बने महान

रावण लंका में नहीं, घर-घर करे निवास
रहता है हर मानव में, निशदिन श्वासों-श्वास
निशदिन श्वासों-श्वास, दु:खी है दुनिया सारी
धन, दौलत, औलाद, न आये सुख की बारी
काम, क्रोध, मद, लोभ ने सुख लिया चुराए
सब कुछ होते पास में, फिर भी हाय-हाय

रावण को यदि मारना, पिओ प्रभु का जाम
नहीं दशहरा एक दिन, है यह आठों याम
है यह आठों याम, प्रभु से ध्यान लगायें
हम हैं आत्मा रूप, यही सब को समझायें
अपना अन्तिम जन्म यह, इसका लाभ उठायें
मानेंगे सुख पायेंगे, ना मानें पछतायें

स्नेही पाठकों को आत्मा रूपी दीपक को प्रकाशित करने के यादगार पर्व दीपावली की कोटि-कोटि हार्दिक शुभ बधाइयाँ